B-2

L-5

दिनांक
30-10-23

मैसूर विजय (To be Continued---)

टीपू सुलतान

- द्वितीय आंग्ल मैसूर युद्ध के दौरान जब हैदर की मृत्यु हो गयी तो टीपू को मैसूर की गद्दी संभालनी पड़ी और उसके विभिन्न प्रयासों ने अंग्रेजों को असन्तुष्ट कर दिया।
- टीपू ने नया कलेन्डर व नई मुद्रा प्रणाली को अपनाया।
- सक्रिय विदेश नीति का पालन करते हुये उसने अपने दूत तुर्की, मिश्र व फारस जैसे देशों में भेजे और अंग्रेजों की प्रतिस्पर्धा को समझते हुये उसने नौसेना की स्थापना का भी प्रयास किया।
- टीपू फ्रांसीसी क्रांति के प्रति सकारात्मक भाव रखता था और यहां तक कि उसने जैकोबिन क्लब की सदस्यता भी हासिल की थी और अपने आपको नागरिक टीपू कहता था तथा श्रीरंगपट्टनम के किले में उसने स्वतंत्रता का वृक्ष भी लगाया।

फ्रांसीसी क्रांति के प्रति टीपू के लगाव और फ्रांसीसियों से बेहतर संबंध स्थापना के प्रयासों को अंग्रेज बरदास्त नहीं कर सके।

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Learning Platform
KHAN SIR

भारतीय इतिहास में द्वितीय आंग्ल मैसूर युद्ध के दौरान पहली बार रॉकेट का प्रयोग टीपू सुल्तान द्वारा किया गया टीपू के इन कार्यों को देखकर तथा आधुनिक प्रशासनिक प्रणाली की ढसकी समझ को देखते हुये अंग्रेजों को यह भय सताने लगा कि यदि टीपू को न रोका गया तो वह अंग्रेजों के समकक्ष ही उन्नत प्रणाली विकसित कर लेगा जो अंग्रेजों के साधुनिक होने की मंशा को ही ध्वस्त कर देगा।

आंग्ल मैसूर युद्ध

प्रथम (1767-69) -

- प्रथम युद्ध का कारण अंग्रेजों व हैदर की बढ़ती महत्वाकांक्षा थी।
- अंग्रेजों ने कूटनीति का प्रयोग करते हुये मराठा और निजाम को अपनी ओर मिलाकर हैदर को अलग-थलग करना चाहा किन्तु हैदर ने चालाकी से इन्हें अपनी ओर मिलाकर ब्रिटिश शक्ति को मनोवैज्ञानिक दबाव में ला दिया और प्रथम युद्ध में सामान्यतः हैदर अली का पलड़ा भारी रहा और अंततः 1769 में मद्रास की संधि से युद्ध विराम हुआ।

KGS IAS KHAN GLOBAL STUDIES Most Trusted Learning Platform

द्वितीय युद्ध (1780-84)

- 1780 का समय आते-2 दक्षिण भारत की परिस्थितियों में व्यापक परिवर्तन आ चला था – मद्रास की संधि में यह निर्धारित हुआ था कि यदि अंग्रेजों या मैसूर पर कोई तीसरी शक्ति हमला करेगी तो दोनों मिलकर उसका सामना करेंगे।
- किंतु जब मराठों ने मैसूर पर आक्रमण किया तो अंग्रेजों ने कोई सहायता नहीं की और हैदर के प्रभाव वाले क्षेत्र माहे पर कब्जा करने का प्रयास किया जो द्वितीय आंग्ल मैसूर युद्ध का कारण बन गया।
- इस युद्ध में भी कई मोर्चों पर हैदर की जीत हुई किंतु पोर्टोनोवो में सायर कूट के नेतृत्व में अंग्रेजों ने हैदर को शिकस्त दी।
- इसी युद्ध के दौरान हैदर की मृत्यु हो जाने से टीपू को सत्ता संभालनी पड़ी और दोनों ही पक्ष 1784 में मंगलौर की संधि हेतु सहमत हुए।

तृतीय युद्ध (1790-92)

- टीपू सुल्तान द्वारा आधुनिक तरीके से प्रशासनिक संचालन तथा फ्रांसीसियों से लगाव इस युद्ध का मुख्य कारण बना। वस्तुतः लॉर्ड कार्नवालिस अंग्रेजों की प्रतिष्ठा को पुनः स्थापित करना चाहता था।

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
Trusted Learning Platform
KHAN SIR

इस बार अंग्रेजों ने मराठा और निजाम को अपनी ओर मिलाकर मैसूर की ताकत को अकेला कर दिया और टीपू को हार का सामना करना पड़ा तथा श्रीरंगपट्टनम की संधि (1792) से मैसूर का लगभग आधा साम्राज्य छीन लिया गया और यहां तक कि उसे युद्ध के लिए आर्थिक जुर्माना भी देना पड़ा।

- कार्नवालिस ने विजयी होने के बाद कहा " हमने अपने मित्रों को शक्तिशाली बनाये बगैर अपने शत्रु को पंगु बना दिया।"

KGS IAS KHAN GLOBAL STUDIES KHAN SIR

चतुर्थ युद्ध (1799)

- जब लॉर्ड वेलेजली बंगाल का गवर्नर जनरल बनकर भारत आया तो सम्पूर्ण भारत में प्रभुत्व स्थापित करने के लिए उसने सहायक सन्धि की कूटनीतिक प्रणाली को हथियार बनाया और टीपू को सहायक सन्धि स्वीकारने को कहा।
- टीपू द्वारा इसे अस्वीकृत करना चौथे आंग्ल मैसूर का कारण बना और इस युद्ध के दौरान लड़ते हुये श्रीरंगपट्टनम के किले में टीपू को वीरगति प्राप्त हुई और मैसूर के प्रभावी क्षेत्रों को ब्रिटिश साम्राज्य में मिलाकर मैसूर के छोटे से भाग में वड्यार वंश के शासन को पुनः स्थापित कर दिया गया।

प्रश्न- हैदर की लड़ाई ईस्ट इंडिया कंपनी से थी जबकि टीपू सुल्तान को ब्रिटिश साम्राज्य से लड़ना पड़ा स्पष्ट कीजिए। ⇓

हैदर	टीपू
→ क्षेत्र विस्तार एवं आर्थिक हितों के लिए संघर्ष	↳ अंग्रेजों को देश से बाहर करना ↳ शिक्षित, आधुनिक मुद्रा प्रणाली की शुरूआत ↳ दूतों को विदेश में भेजना

मराठा विजय

- मराठा साम्राज्य की स्थापना 17वीं सदी के उत्तरार्द्ध में छत्रपति शिवाजी द्वारा की गयी और शीघ्र ही अपनी इच्छा शक्ति व महत्वाकांक्षा से मराठा साम्राज्य भारत की महत्वपूर्ण शक्ति बनकर उभरा और यहाँ तक कि उसे मुगलों का उत्तराधिकारी कहा जाने लगा।

- साम्राज्य की प्रशासनिक व्यवस्था के संचालन के लिए शिवाजी ने अष्ट प्रधान का गठन किया जिसमें पेशवा पद की स्थिति प्रधानमंत्री के जैसी थी। शिवाजी की मृत्यु के बाद उनके पुत्र सम्भाजी ने मुगलों से संघर्ष जारी रखा और यहां तक कि औरंगजेब के विद्रोही पुत्र अकबर द्वितीय को शरण भी दी। मुगलों ने उन्हें युद्ध में पराजित कर मृत्यु दण्ड दे दिया और शाहू को

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
Trusted Learning Platform
KHAN SIR

गिरफ्तार कर लाल किला में कैद कर लिया गया।

- इसके बाद राजा राम ने छत्रपति का पद संभाला किन्तु मुगलों के आक्रमण के कारण वे कभी स्थिरता से गद्दी पर न बैठ सके और उनकी मृत्यु के बाद उनकी पत्नी ताराबाई ने मुगलों से संघर्ष जारी रखा और इसी समय जब पेशवा बालाजी विश्वनाथ की रणनीति से शाहू की रिहाई हुई तो मराठा उत्तराधिकार का संघर्ष शुरू हो गया और धीरे-धीरे पेशवा प्रभावी ताकत बनकर उभरने लगा।

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Learning Platform
© KHAN SIR

बाजीराव प्रथम (1720-40)

- शिवाजी के बाद गोरिल्ला युद्ध में सबसे कुशल माने गये और इनके नेतृत्व में ही मराठे केवल दक्षिण की ही नहीं बल्कि सम्पूर्ण भारत की मजबूत शक्ति बनकर उभरे।

- इन्होंने हिन्दू पद-पादशाही के आदर्श का पालन कर मराठा शक्ति को बढ़ाया अर्थात सभी हिन्दू शक्तियों को एकजुट होकर विदेशी शक्तियों का सामना करने के लिए कहा

- बालाजी बाजीराव (नाना साहब) (1740-61)
  - इनके कार्यकाल में पेशवा का पद पूरी तरह पैतृक हो गया और अब मराठे इतने शक्तिशाली हो चले थे कि इन्होंने दिल्ली के मामले में प्रत्यक्ष हस्तक्षेप करना शुरू

कर दिया और 1752 में अहमदिया संधि के द्वारा समझौता हुआ कि मुगल सम्राट की रक्षा का दायित्व मराठों पर होगा तथा इसके बदले मराठे मुगल क्षेत्रों से भी राजस्व वसूली कर सकेंगे।

* नाना साहब को यह महसूस होने लगा कि उन्हें किसी अन्य की सहायता की आवश्यकता नहीं है अतः उन्होंने हिन्दू पद-पादशाही के आदर्श का उलंघन किया तथा राजपूत, जाट व सिखों जैसी शक्तियों से भी चौथ वसूली कर उन्हें असन्तुष्ट कर दिया।

- 1750 की संघोला की संधि से छत्रपति ने महत्वपूर्ण अधिकार भी पेशवा को सौंप दिये अर्थात अब पेशवा तथ्यतः (De-facto) शक्ति के साथ ही विधितः शक्ति भी बन गया।

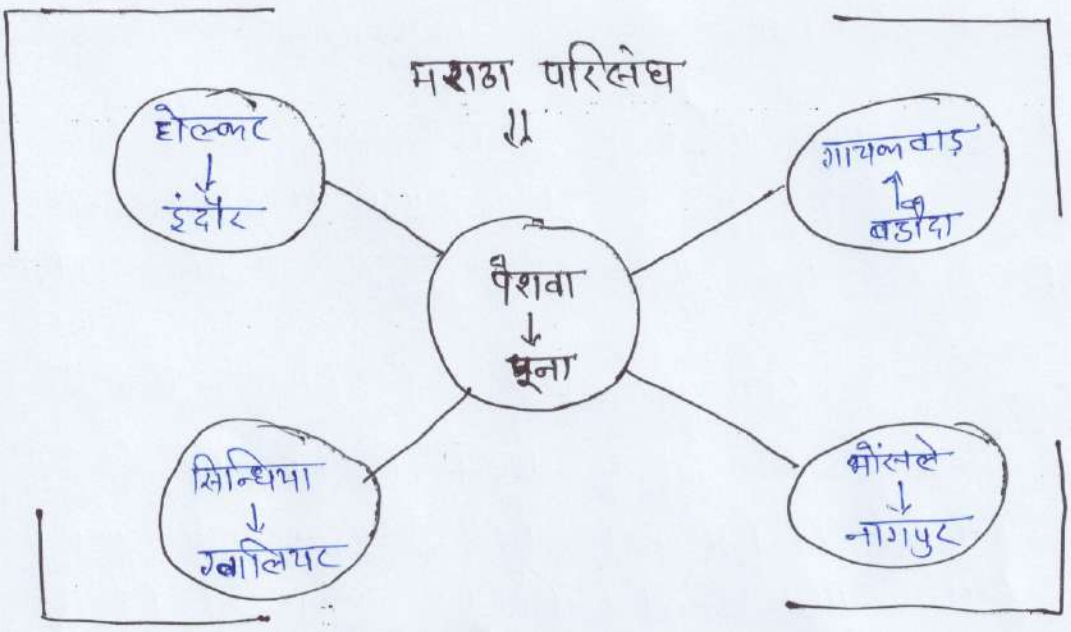

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
KHAN SIR

⇒ पानीपत का तृतीय युद्ध - 1761

- भारतीय इतिहास में पानीपत के युद्धों का विशिष्ट स्थान रहा है जहां पानीपत के प्रथम युद्ध में भारत में मुगल साम्राज्य की नींव रखी गयी तो वहीं पानीपत के तीसरे युद्ध ने भारतीय इतिहास की दिशा को पुनः बदलने का कार्य किया क्योंकि मराठों की पराजय ने प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष रूप से अंग्रेजों को भारत में स्थापित होने का अवसर दे दिया।

स्वभाविक प्रश्न यह उठता है कि यदि अफगानों ने दिल्ली पर आक्रमण किया तो फिर मराठों ने युद्ध का दायित्व अपने ऊपर क्यों लिया वस्तुतः भारत की वास्तविक शक्ति का केन्द्र अब दिल्ली में ना होकर मराठा साम्राज्य की ओर स्थानान्तरित हो चला था और 1752 की अहमदिया संधि से दिल्ली की रक्षा का दायित्व मराठों ने ले लिया था मत स्पष्ट था कि किसी भी विदेशी शक्ति को यदि भारत में श्रेष्ठता स्थापित करनी हो तो उसे मराठों से ही संघर्ष करना होगा।

दूसरी तरफ अहमदशाह अब्दाली के नेतृत्व में अफगान न सिर्फ भारत की संम्पति लूटने हेतु आकर्षित थे बल्कि वे भारत में साम्राज्य विस्तार की इच्छा भी रखने लगे थे और पानीपत के तृतीय युद्ध से पहले

अब्दाली चार बार भारत पर आक्रमण कर चुका था और यहां तक कि पंजाब में उसने अपने पुत्र को शासक नियुक्त कर दिया था।

मराठों ने उत्तर भारत की राजनीति में हस्तक्षेप करते हुए अब्दाली के प्रतिनिधि को हराकर वहां अपना प्रतिनिधि शासक नियुक्त कर दिया और इस तरह मराठा व अफगानों के मध्य संघर्ष स्वभाविक हो गया।

मराठों की पराजय के कारण :-

- मराठा सेनापति सदाशिवराव की अदूरदर्शिता तथा अनुभवी मराठा सरदारों की सलाह न मानने की प्रवृत्ति ने युद्ध की रणनीति को बेहतर रूप नहीं लेने दिया विशेषत: गोरिल्ला / छापामार युद्ध लड़ा जाये या फिर आमने सामने का प्रत्यक्ष युद्ध - इस पर रणनीतिक चर्चा अधिक न हो सकी।
- मराठों की चौथ वसूली के कारण राजपूत, जाट व सिख जैसी भारतीय शक्तियां असंतुष्ट थी इसीलिए मराठे अकेले पड़ गये जबकि अफगानों के साथ अवध व रोहिला शक्तियाँ थीं।

इसका परिणाम यह हुआ कि अब्दाली को खाद्य आपूर्ति व अन्य आवश्यक चीजों की मदद मिलती रही

किन्तु मराठों को किसी प्रकार की सहायता न मिल पाने से विशेषतः खाद्य समस्या के कारण भुखमरी की स्थिति से जूझना पड़ा जिसने उनका मनोबल प्रभावित हुआ और वे विवशता वश युद्ध के लिये आगे बढ़े।

- पानीपत तृतीय युद्ध के समय ही राघोबा के नेतृत्व में दक्षिण में निजाम से भी युद्ध का मोर्चा खोल दिया गया और एक ही समय में दो शत्रुओं का दबाव भी रणनीतिक भूल मानी जाती है, और सैन्य रणनीति के अन्तर्गत अफगानों ने जहां हल्की तोपों के प्रयोग से युद्ध प्रणाली को गतिशील बनाया तो वहीं मराठों की तरफ से कुशल तोप संचालन इब्राहिम गार्दी के नेतृत्व में भारी तोपों के कारण युद्ध की परिस्थितियों के अनुसार उनकी दिशा को मोड़ ना पाना भी हार का एक कारक साबित हुआ।
- मराठा सैनिकों के साथ बड़ी संख्या में तीर्थ यात्रा के लिए नागरिकों का शामिल होना, अफगानों की तरह मराठों के पास सारक्षित सेना का ना होना, होल्कर जैसे सरदार का युद्ध क्षेत्र छोड़कर चले जाना और अन्ततः सदाशिव राव का भावनात्मक निर्णय भी मराठों की हार की वजह बना।

KGS IAS
THE GLOBAL STUDIES
Most Trusted Learning Platform
KHAN SIR